अंक २
खंड ४
हिन्दी दिवस २०२३

The Mithibai Chronicles

The Mithibai Chronicles is a bimonthly newsletter of Mithibai College Jitendra Library. The main objective of this Newsletter is to provide information about New Arrivals and other library resources to library users. Additionally, it serves as a communication channel between a library and its users.

Hindi language was spoken in most of the regions of India; hence, on September 14, 1949, the Constituent Assembly decided to make Hindi an official language of the Central Government. Since 1953, September 14 has been celebrated every year as Hindi Day all over India to render the importance of this decision and spread Hindi in every region..

The current issue of The Mithibai Chronicles is a Special issue published on the occasion of **Hindi Divas, 14th September 2023.** Mr. Rakesh Vinayak Panse, Assistant Professor -Hindi Language, extended his help for the newsletter by providing excellent book reviews.

We are sure that you will enjoy reading this Newsletter as well as books.

Mrs. Archana Garate
Librarian

केवल कुछ समय के लिए पुस्तकों को रटकर ज्ञान अर्जित न करे, बल्कि पुस्तकों को ध्यान से पढ़कर पूरी उम्र भर के लिए ज्ञान अर्जित करे।

Newsletter at a Glance

Book Reviews: Hindi Books
New Arrivals: Hindi Books
List of a few Hindi Books
Activity Reports: August 2023

HAPPY READING!

A BIMONTHLY NEWSLETTER

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।

या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥

या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥1॥

अर्थात्

माँ भगवती सरस्वती जो विद्या तथा ज्ञान की देवी है, कुन्द के फूल, चंद्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं तथा जो हमेशा श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, एवं इनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान रहती है, जो श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किये हुए हैं और भगवान ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा हमेशा पूजी जाती है, वही संपूर्ण जड़ता तथा अज्ञान को दूर करने वाली माँ सरस्वती हर विपत्ति से हमारी रक्षा करें !

कुछ कविताएँ..

पुस्तकालयों का देश

अब हर एक गाँव में पुस्तकालय होना चाहिए,
हर बच्चे-बड़े को इसका हिस्सा होना चाहिए।

बाहर का अब तक बहुत विकास किया हमने,
अब थोड़ा ध्यान भीतर का होना चाहिए।

मैकाले की शिक्षा पद्धति ने केवल क्लर्क पैदा किए,
बौद्धिक शिक्षा की ओर प्रस्थान होना चाहिए।

तक्षशिला, नालंदा जैसी शिक्षा विद्या हो यहाँ,
समय आ गया पुनः देश विश्वगुरु होना चाहिए।

आओ आज मिलकर चलाए एक ऐसी मुहीम,
अब भारत पुस्तकालयों का देश होना चाहिए।

कवि - मुकेश अग्रवाल

किताबें झाँकती हैं बंद आलमारी के शीशों से...

किताबें झाँकती हैं बंद आलमारी के शीशों से
बड़ी हसरत से तकती हैं

महीनों अब मुलाकातें नहीं होती
जो शामें उनकी सोहबत में कटा करती थीं
अब अक्सर गुज़र जाती है कम्प्यूटर के पर्दों पर
बड़ी बेचैन रहती हैं क़िताबें...
....

... किताबें मँगाने, गिरने, उठाने के बहाने रिश्ते बनते थे
उनका क्या होगा
वो शायद अब नहीं होंगे !!

कवि - गुलज़ार

किताबें कुछ कहना चाहती हैं...

किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं॥

किताबों में चिड़िया चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं

किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं

किताबों में राकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है

किताबों में कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं...
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं...

कवि - सफ़दर हाश्मी

पुस्तक परिचय

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित खंड काव्य 'यशोधरा', गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा पर लिखा हुआ खंडकाव्य है और यह खंडकाव्य खड़ी बोली हिंदी में लिखा हुआ है।

मैथिलीशरण गुप्त को भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता माना जाता है। इस खंडकाव्य के माध्यम से उन्होंने सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित पात्र जो वास्तव में उपेक्षित नहीं रखा जाना चाहिए था ऐसे एक महत्वपूर्ण पात्र को लेकर इस काव्य की रचना की है।

माना जाता है कि द्विवेदी युग मेंमहावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने उपेक्षित पात्रों पर काव्य रचनाएँ लिखने के लिए और वह भी खड़ी बोली हिंदी में लिखने के लिए कवियों से निवेदन किया था इस तथ्य के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त ने यशोधरा इस खंड काव्य की रचना की है।

इस खंडकाव्य में गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की भावुकता, संवेदनशीलता, पति परायणता के उदात्त दर्शन होते हैं।

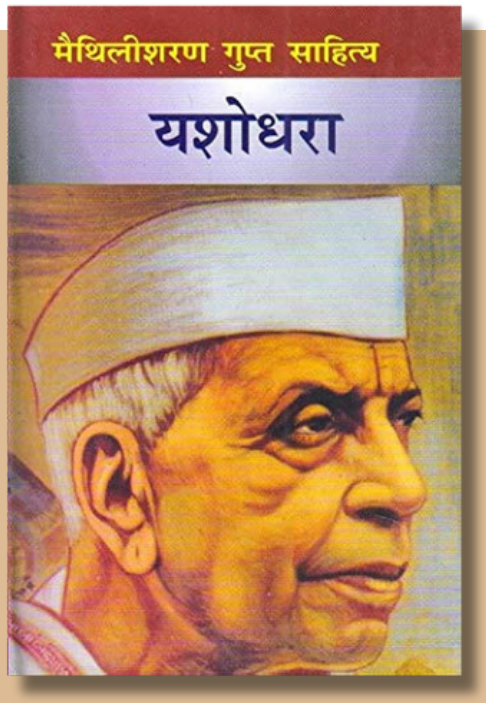

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय

पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक

८९१.४३१ GUP

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास; साहित्य इतिहास की दृष्टि से प्रामाणिक दस्तावेज है।

लगभग एक हजार साल के हिंदी साहित्य को इतिहास के रूप में व्याख्यायित करते हुए उसकी एक प्रमाणिक कृति समग्र हिंदी जगत के सम्मुख रखना इस इतिहास की एक बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वीरगाथा काल/आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य के इतिहास को अध्ययन की दृष्टि से विभाजित किया गया है।
एक हजार साल के प्रमुख रचनाकारों के लेखन की विशेषताओं को, साहित्यिक देन को रामचंद्र शुक्ल जी ने अत्यंत मौलिक रूप में अध्यताओं के सम्मुख रखा है।

यह इतिहास; हिंदी साहित्य जगत में साहित्य इतिहास की दृष्टि से मील का पत्थर माना जाता है।

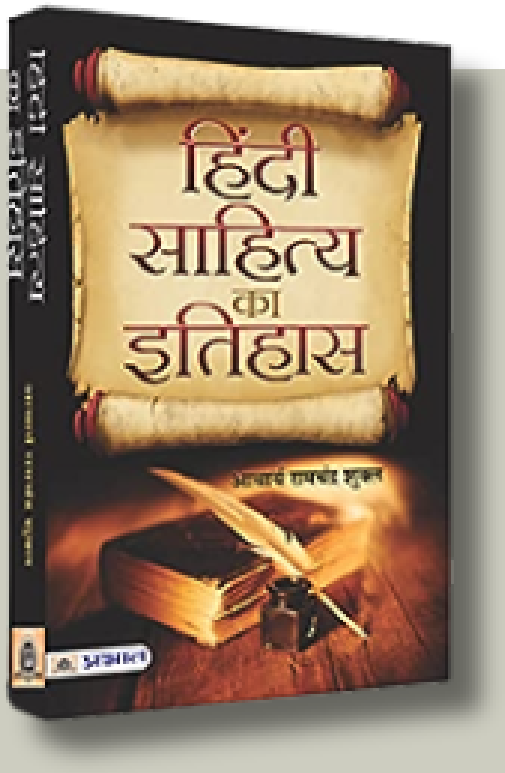

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय

पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक

८९१. ४३०९ SHU

पुस्तक परिचय

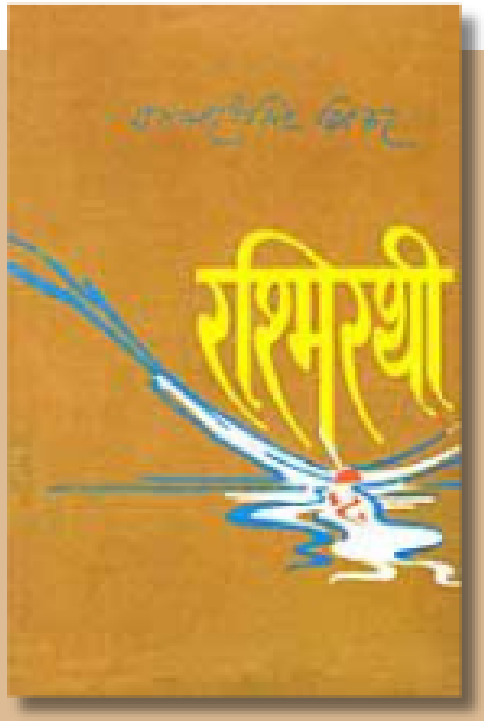

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३१ DIN

रश्मिरथी यह रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित एक खंडकाव्य है। यह खंडकाव्य महाभारत के उपेक्षित पात्र कर्ण पर केंद्रित है। इस काव्य रचना के माध्यम से रामधारी सिंह दिनकर ने भारतीय समाज में एवं वैश्विक समाज में होने वाले उपेक्षित पात्रों की व्यथा को खड़ी बोली हिंदी में अभिव्यक्त किया है।

इस रचना 'रश्मिरथी' में कर्ण-कुंती, इंद्र-कर्ण संवाद अत्यंत मार्मिक है। सप्तम सर्गों में विभाजित यह खंडकाव्य कर्ण के गुणों से, उसकी समस्याओं से भरा हुआ काव्य है। साथ ही साथ खड़ी बोली हिंदी जब काव्य की भाषा बनी और उपेक्षित पात्रों पर जब इस भाषा में लिखा जाने लगा तब इस भाषा की शक्ति संपूर्ण भारतीय समाज और वैश्विक समाज के सामने एक उत्कृष्ट काव्य-भाषा का एक बहुत अच्छा उदाहरण बना है।

कर्ण की दानशूरता, कर्ण के संकल्प, कर्ण की मित्रता निभाने की वचनबद्धता इत्यादि विषयों को जानने के लिए एवं भारतीय संस्कृति आदि को भी जानने के लिए यह रचना अत्यंत उपयोगी है। यह हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

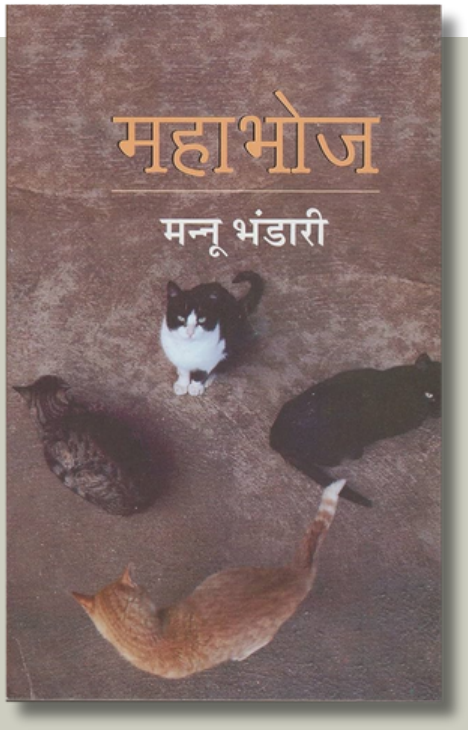

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३३ BHA

हिंदी साहित्य की चर्चित रचनाकार मन्नू भंडारी कृत 'महाभोज' उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट राजनीति पर लिखा हुआ उपन्यास है।

यह उपन्यास भारत की स्वातंत्र्यपूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर स्थितियों में क्या अंतर है इसे जानने के लिए उपयोगी है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र बिसेसर नाम का एक युवक जिसकी मृत्यु हो जाती है।

महाभोज उपन्यास में बिसेसर की मृत्यु, मृत्यु है? या फिर उसका कत्ल कर दिया गया है? इस पर संपूर्ण उपन्यास की कथा केंद्रित है। पाठक अपने अध्ययन में इस निष्कर्ष तक पहुँचने लगते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट स्थितियाँ सत्य एवं न्याय के साथ चलने वाले युवक के जीवन के लिए कठिनाइयाँ निर्माण करने वाली है, उसके जीवन को नष्ट करने वाली है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में अवसरवादिता, स्वार्थ, भ्रष्टाचार के कारण भारतीय आम लोगों का जीवन कठिनाइयों से भरा पड़ा है। यह विचार इस उपन्यास के माध्यम से मन्नू भंडारी ने भारतीय समाज को दिया है और इस माध्यम से भारतीय समाज को जागृत करने का कार्य किया है।

पुस्तक परिचय

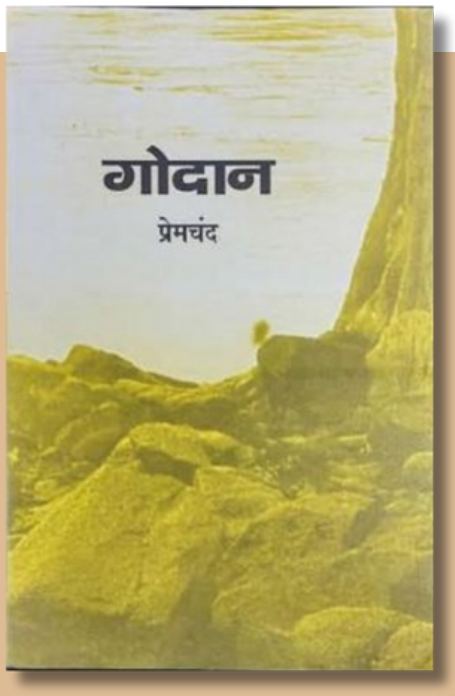

हिंदी के कथासम्राट प्रेमचंद का गोदान उपन्यास भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य माना जाता है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'होरी' भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। होरी के जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ अर्थात भारतीय किसान जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ है।

यह उपन्यास भारतीय जनमानस एवं भारतीय किसान परिवारों के विचारों को जानने के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। प्रेमचंद एक बहुत बड़े समाजशास्त्री दिखाई देते हैं। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से भारतीय संस्कृति; भारतीय महिलाओं के कारण टिकी हुई है इसकी भी अभिव्यक्ति की हुई है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र होरी, उसकी पत्नी धनिया के जीवन का संघर्ष इस उपन्यास की केंद्रीय कथा है। एक भारतीय किसान किस प्रकार अपने परिवार में या स्वयं के पास एक गाय होने की चाह / साध लेकर जीता है की कथा है।

उससे जुड़ी हुई यह कथा अत्यंत मार्मिक, चिंतनशील है।

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३३ PRE

खड़ी बोली हिंदी की समझ के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की हिंदी भाषा की उत्पत्ति को जानना अत्यंत आवश्यक है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली हिंदी को व्याकरण सम्मत भाषा बनाया। हिंदी की उत्पत्ति; संस्कृत-पालि- प्राकृत-अपभ्रंश से किस प्रकार हुई, उस प्रक्रिया से गुजरने पर उसका परिणाम हिंदी शब्द भंडार पर कैसा हुआ? इस पर गहराई में जाकर उन्होंने इस पुस्तक में हिंदी भाषा की उत्पत्ति पर विचार किया है।

खड़ी बोली हिंदी को व्याकरण सम्मत भाषा बनाने के कारण ही आगे चलकर हिंदी भारत की राजभाषा की भूमिका निभाने में समर्थ बनी। साथ ही साथ हिंदी केवल भारत की राजभाषा ही नहीं बनी बल्कि हिंदी भारत की और आज के इस उत्तर आधुनिक युग में साहित्य की एक सशक्त भाषा बनी हुई है और रहेगी।

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१. ४३० ९ DVI

पुस्तक परिचय

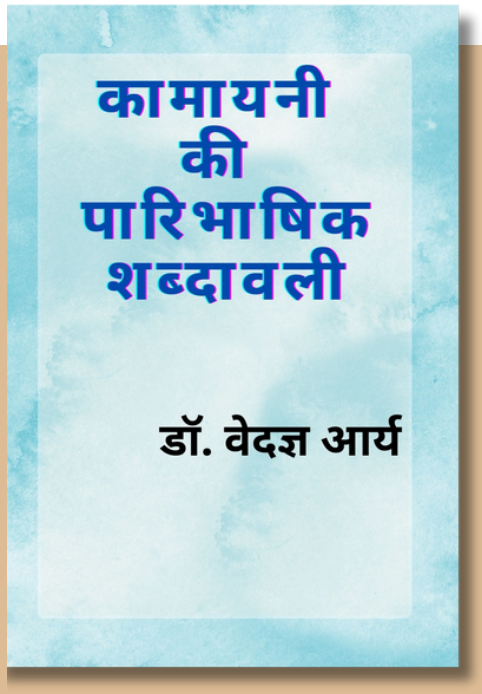

जयशंकर प्रसाद रचित महाकाव्य 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद ने मनुष्य की चिंता से लेकर आनंद की यात्रा कैसे हो सकती है? इसे सरस खड़ी बोली हिंदी में अभिव्यक्त किया है।

इस महाकाव्य में उन्होंने जिन शब्दों का प्रयोग किया है उस शब्दावली की परिभाषा, या उन शब्दों के अर्थ, उसकी परिव्याप्ति को समझना अत्यंत आवश्यक है। जयशंकर प्रसाद की कामायनी को समझने के लिए, साथ ही साथ मनुष्य जीवन में चिंता से लेकर आनंद की यात्रा को समझने के लिए; उन शब्दों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संदर्भों को जानना आवश्यक है। इस दृष्टि से डॉ. वेदज्ञ आर्य जी का यह शब्दावली कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जयशंकर प्रसाद को हिंदी की छायावादी काव्यधारा का एक सशक्त कवि माना जाता है। उन्हें एक सशक्त नाटककार भी माना जाता हैं। किसी भारतीय भाषा का कोई एक रचनाकार केवल उस भाषा का रचनाकार रह कर अपनी रचनाएँ नहीं लिखता है, बल्कि उसकी अभिव्यक्ति में वैश्विक समस्याओं का समाधान होता है। जयशंकर प्रसाद की इस रचना को, शब्दों को समझने के लिए डॉ. वेदज्ञ आर्य का यह कार्य सराहनीय है। इसलिए 'कामायनी की पारिभाषिक शब्दावली' का अध्ययन आवश्यक है।

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३१ ०१४ ARY

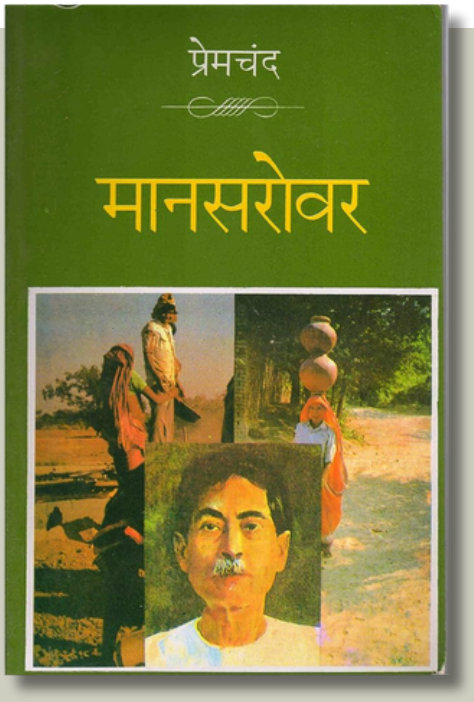

रचनाकार किसी भी भाषा में क्यों न लिखे? किंतु उसके विचारों में जो समाज कल्याण की भावना रहती है वह उसे केवल एक भाषा या किसी एक प्रांत, प्रदेश तक सीमित नहीं रखती। मुंशी प्रेमचंद हिंदी में 'प्रेमचंद' नाम से लिखते थे और उर्दू में नवाबराय नाम से लिखते थे किंतु उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य जगत् में 'कथासम्राट' माना जाता है।

प्रेमचंद के उपन्यास एवं उनकी कहानियाँ; उनके सशक्त लेखन के कारण, लेखन के लिए उन्होंने जिन विषयों का चयन किया उसके कारण, साहित्य की अमूल्य निधि होने के कारण, उन्हें कथासम्राट माना जाता है। उनकी कहानियाँ मानसरोवर के खंडो में प्रकाशित हैं। यह मानसरोवर का प्रथम खंड है। माना जाता हैं कि प्रेमचंद की कहानियों के पात्र किसी एक प्रांत, प्रदेश, जाति, धर्म से जुड़े हुए न होकर संपूर्ण भारतीय समाज, प्रांत, प्रदेश, भाषा-भाषी, धर्म, जाति, वर्ग के हैं। इसलिए माना जाता है कि प्रेमचंद की रचनाएँ पढ़कर भारत की व्याख्या की जा सकती है। इन कहानियों को पढ़ने पर स्पष्ट होगा, यह प्रतीत होगा, इस निष्कर्ष तक पहुँच पाएँगे कि प्रेमचंद न केवल एक हिंदी कहानीकार है, बल्कि वे एक बड़े समाजशास्त्री, चिंतक, संस्कृतिकर्मी भी हैं।

मानसरोवर के इस खंड में निहित ईदगाह, मनोवृत्ति आदि कहानियों की भाषा सहज सरल मुहावरेदार खड़ी बोली हिंदी है।

इसमें अरबी, फारसी तथा उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। प्रेमचंद की भाषा की जो विशेषताएँ हैं; वह आपको इन कहानियों को पढ़ने पर ही पता चल सकती हैं।

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३३ PRE

पुस्तक परिचय

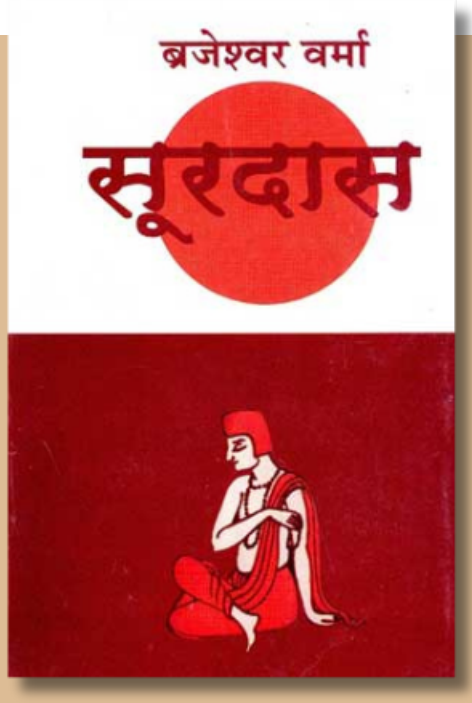

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
२९४.५४४ ०९२ SUR /VER

यह ग्रंथ वात्सल्य के सम्राट कवि सूरदास पर किया गया एक अनुसंधान कार्य है।

सूरदास एक महान कृष्ण भक्त थे। उनकी भक्ति भावना में सखाभाव की प्रधानता दिखाई देती है।

भारतीय भक्ति परंपरा में सूरदास की रचनाएँ अर्थात सूरदास के पद जो प्रमुख रूप में ब्रजभाषा में लिखे हुए हैं वह ब्रजभाषा की, हिंदी की अमूल्य निधि है। कृष्ण जीवन की लीलाओं का वर्णन उन्होंने अपने पदों में किया है।

कृष्ण के प्रति जो अनन्य प्रेम है वह विभिन्न रूपों में उन्होंने अभिव्यक्त किया है। उदा. गोपियों के माध्यम से, यशोदा के माध्यम से, ब्रजवासियों के माध्यम से आदि। इन पदों का स्थान, साथ ही साथ हिंदी में सूरदास का स्थान, उनकी साहित्य भाषा इत्यादि विषयों पर अनुसंधान करना अत्यंत आवश्यक था और आज भी है।

इस दृष्टि से ब्रजेश्वर वर्मा जी ने किया हुआ शोधकार्य इस पुस्तक में संकलित है और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्रीनाथजी के मंदिर में अष्टयाम सेवा विधि करने वाले सूरदास अपने काव्य के माध्यम से भारतीय समाज को प्रेम एवं भक्ति की शिक्षा देते हैं/ देना चाहते हैं। सूरदास के अनुसार मनुष्य जीवन में ज्ञान एवं योग साधना से भी अधिक श्रेष्ठ है प्रेम एवं भक्ति।

सूरदास को वात्सल्य का सम्राट कहा जाता है इसका कारण यह है कि बालकृष्ण के प्रति नंद एवं यशोदा के मन में जो वात्सल्य भाव है, जो स्नेह भाव है; उसे पदों के माध्यम से उन्होंने अत्यंत मौलिक रूप में अभिव्यक्त किया है। कुछ उदहारण:-

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-जोइ कछु गावै॥

मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै॥

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै॥

इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नंद-भामिनि पावै॥

पुस्तक परिचय

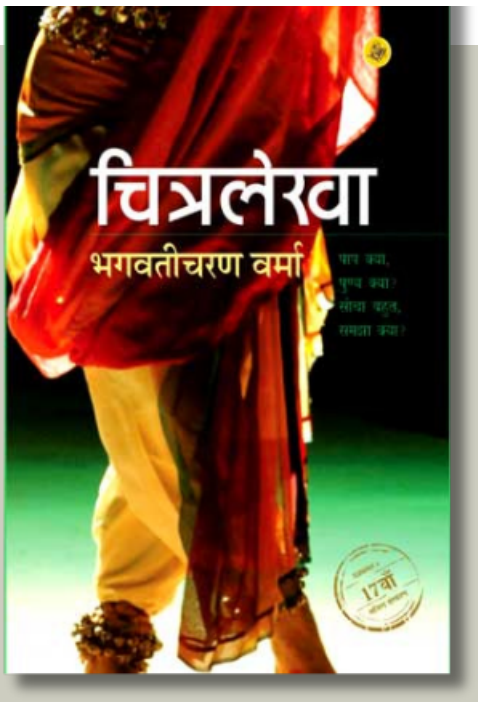

मीठीबाई महाविद्यालय ग्रंथालय
पुस्तक वर्गीकरण क्रमांक
८९१.४३३ VER

भगवतीचरण वर्मा का चित्रलेखा यह उपन्यास भारतीय समाज में रची-बसी पाप एवं पुण्य की धारणा को लेकर लिखा हुआ उपन्यास है।

इस उपन्यास की कथा में भारतीय गुरू-शिष्य परंपरा दिखाई देती है।

महाप्रभु रत्नांबर एक गुरू के रूप में अपने दो शिष्यों को; श्वेतांक और विशालदेव को, क्रमशः बीजगुप्त और योगी कुमार गिरी के यहाँ पाप और पुण्य की खोज के लिए भेजते हैं।

अर्थात् अपने गुरू से श्वेतांक और विशालदेव यह जानना चाहते थे, इस बात का ज्ञान पाना चाहते थे कि मनुष्य जीवन में पाप और पुण्य क्या है?

श्वेतांक को सामंत बीजगुप्त के महल में भेजा जो बीजगुप्त रत्नांबर का शिष्य था और योगी कुमार गिरी के शरण में विशालदेव को भेजा। दोनों शिष्य अलग-अलग स्थितियों में जाते हैं और वहाँ वह अवलोकन करते हैं कि हमें यहाँ पुण्य देखने मिलेगा या पाप देखने के लिए मिलेगा?

महल में हो सकता है पाप मिले? यह दृष्टिकोन लेकर श्वेतांक चलता है, और विशालदेव को जहाँ भेजा गया था; कुमारगिरी के आश्रम में वहाँ उसे लगता है कि यह आश्रम है तो यहाँ पुण्य देखने मिलेगा। तो आगे चलकर दोनों क्या पाते हैं? मनुष्य; जीवन में निरंतर पाप और पुण्य की खोज करता रहता है। भगवतीचरण वर्मा कहना चाहते हैं कि जो स्थितियाँ आती हैं हम उसके अनुसार कर्म करते जाते हैं।

यह उपन्यास हमें हमारे विचारों की प्रगल्भता बढ़ाने के लिए अत्यंत लाभदायी है। भाषिक विशेषताओं की दृष्टि से देखा जाए तो प्रमुख रूप से तत्सम, तद्भव शब्दावली का प्रयोग इस उपन्यास में हमें अधिक दिखाई देता है। अर्थात रचनाकार को भारतीय विचारधारा से जुड़े पाप एवं पुण्य पर विचार करने के लिए के इस प्रकार की शब्दावली की आवश्यकता भी थी।

इस उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है जो चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण दिखाई देता है।

NEW ARRIVALS

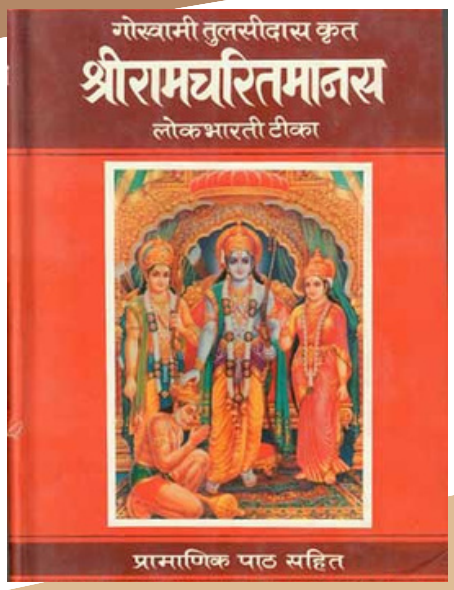

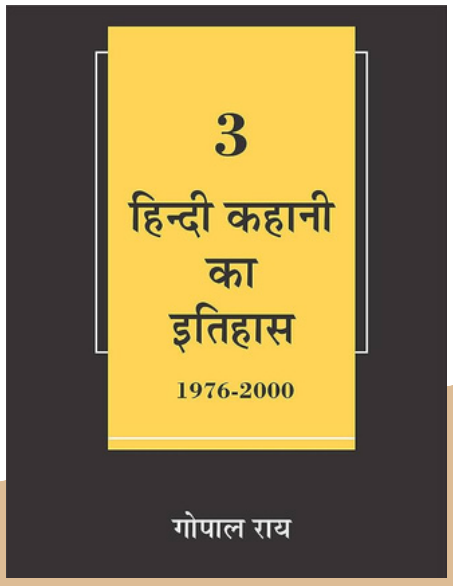

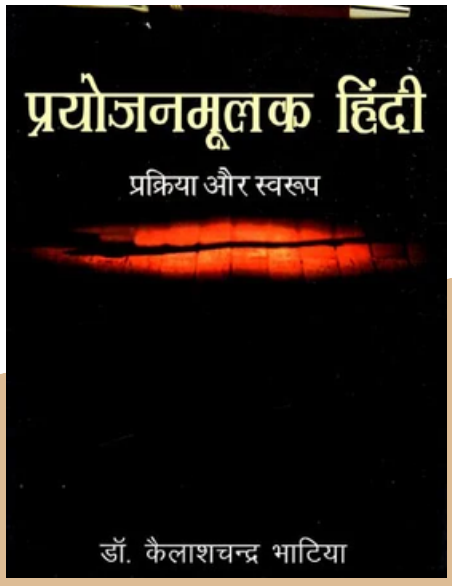

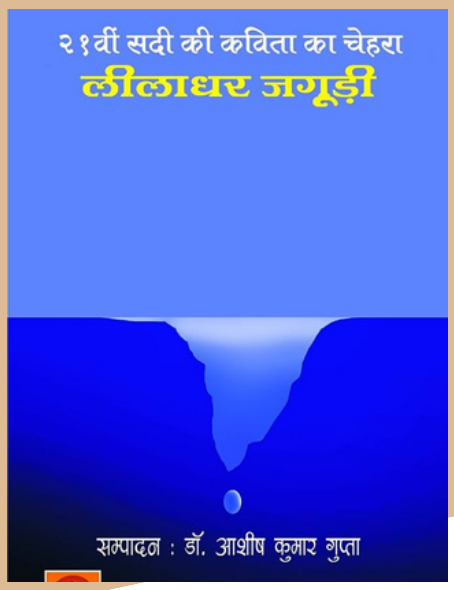

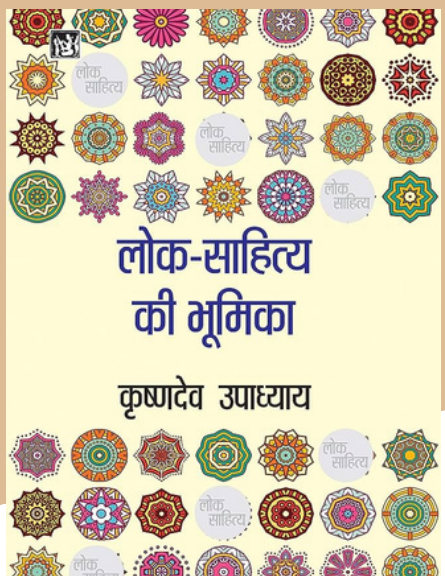

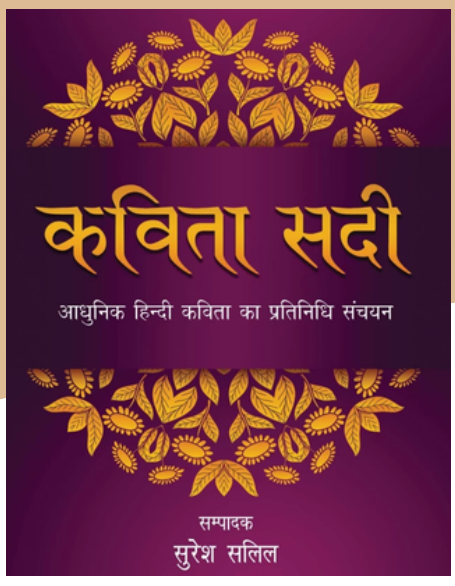

NEW ARRIVALS

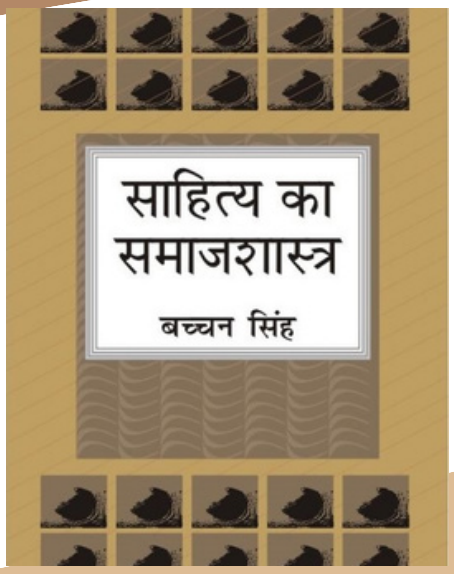

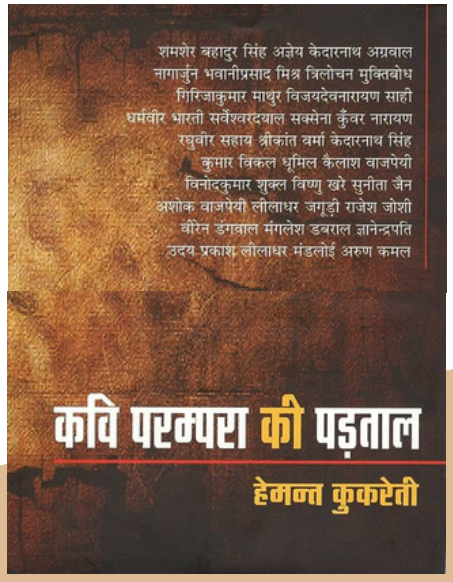

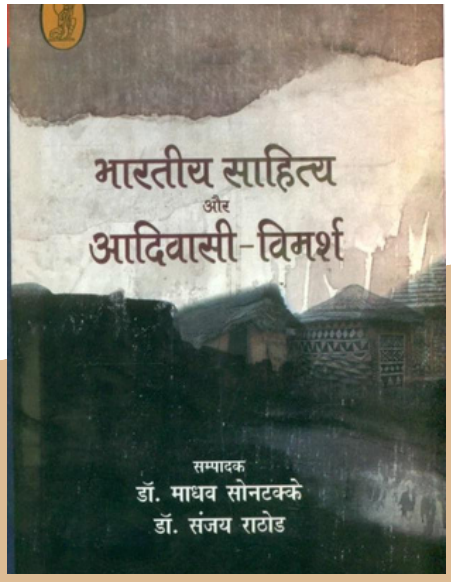

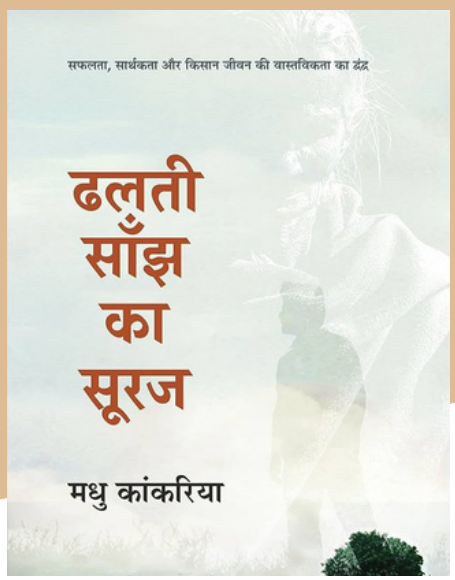

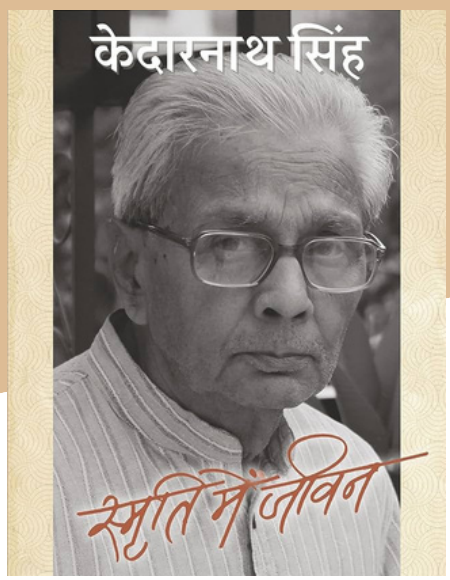

NEW ARRIVALS

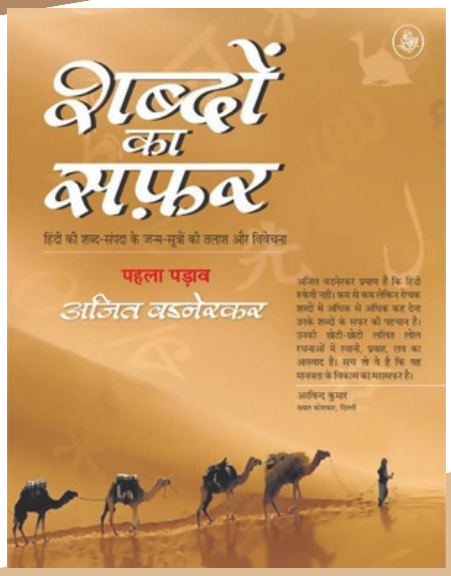

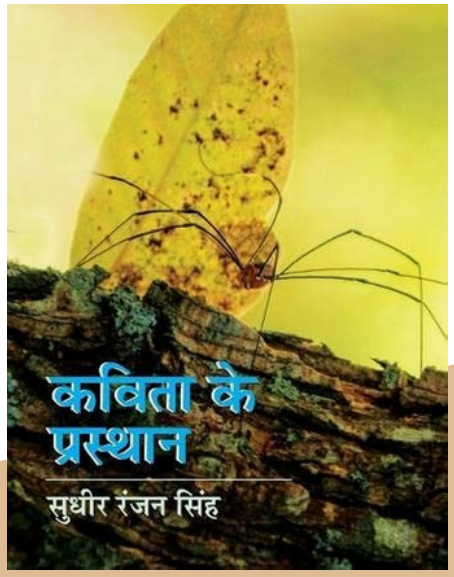

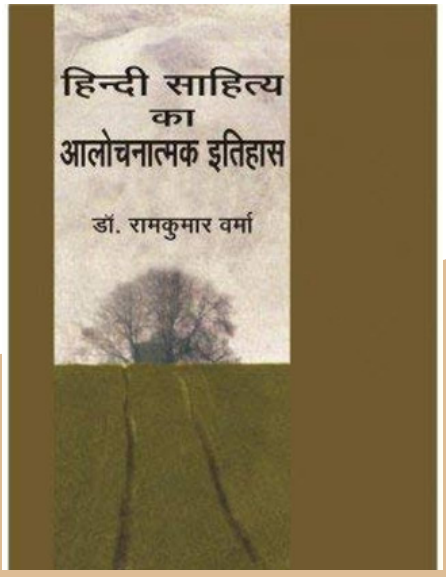

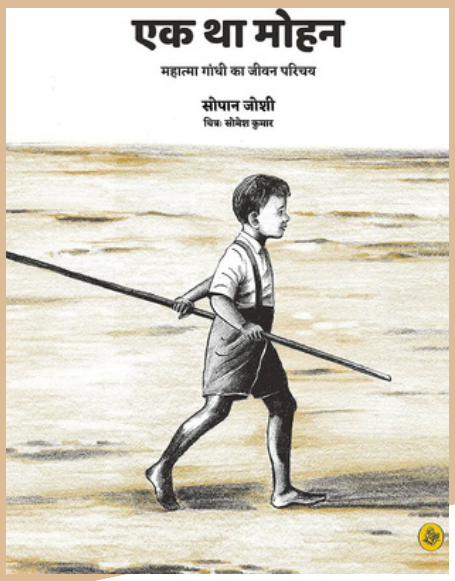

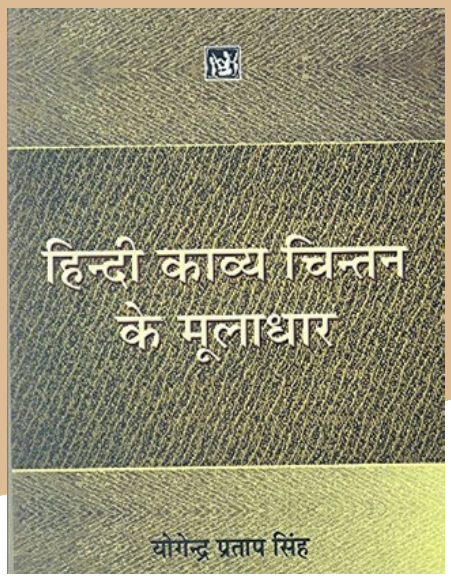

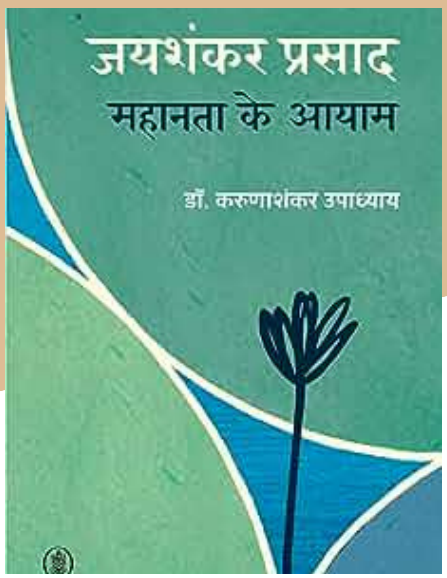

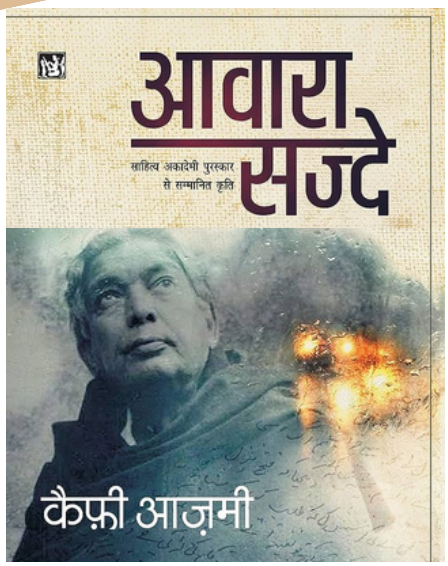

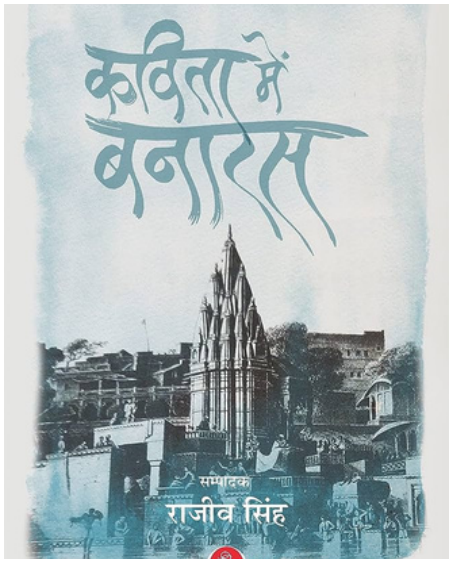

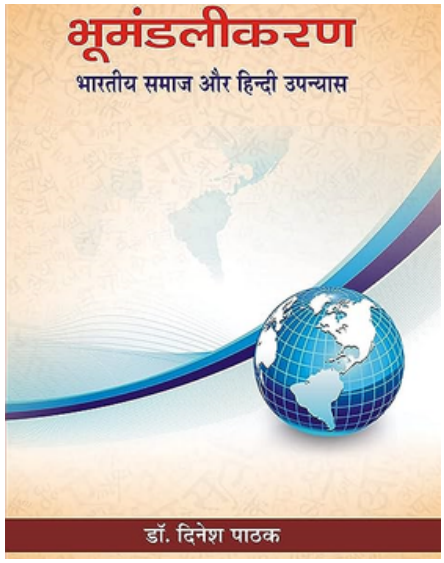

NEW ARRIVALS

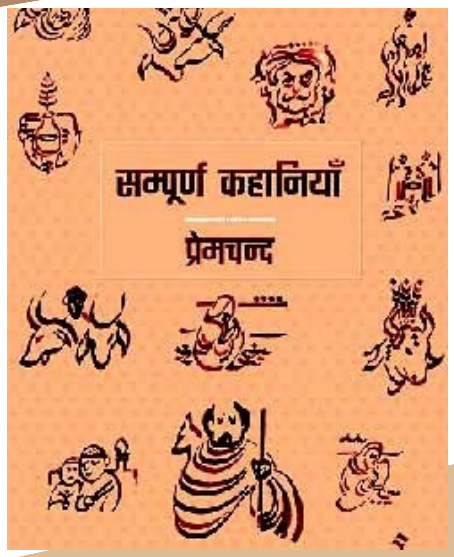

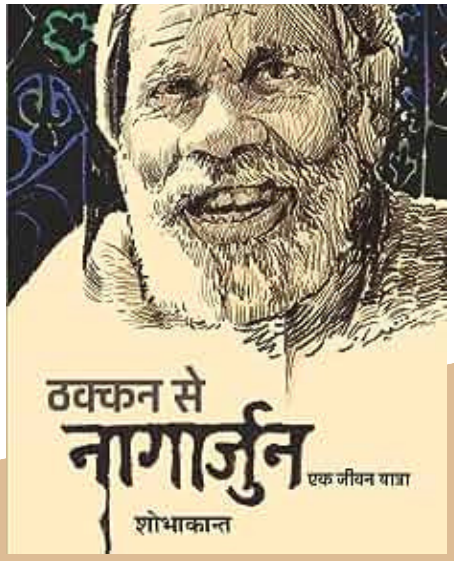

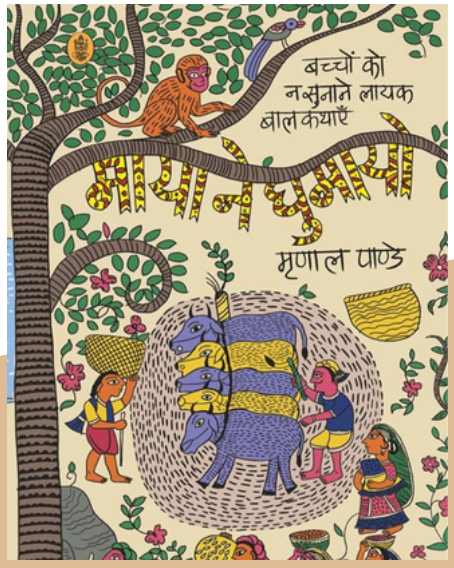

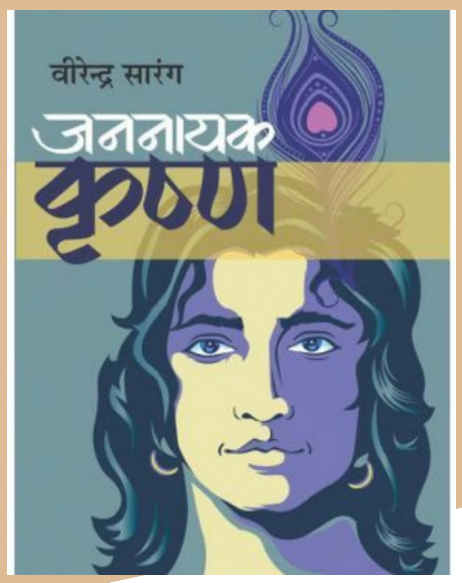

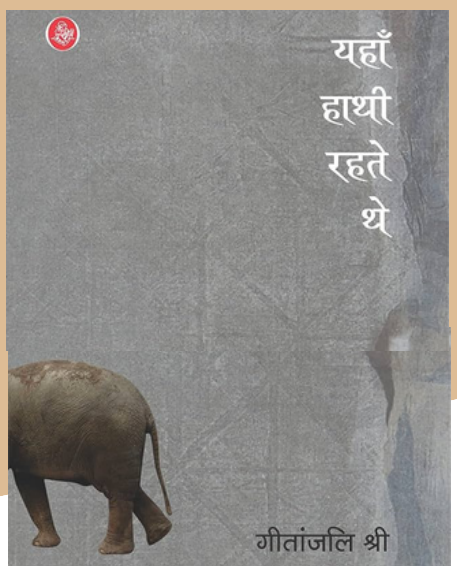

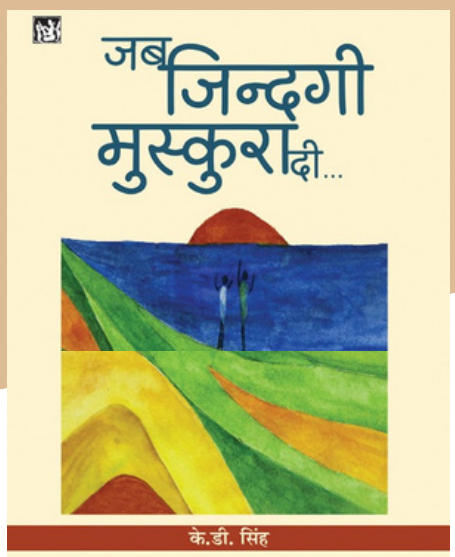

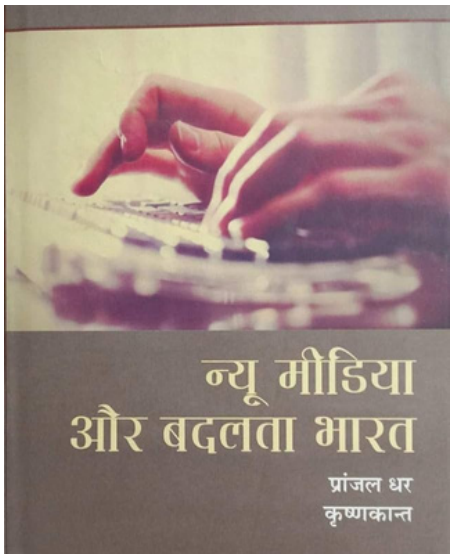

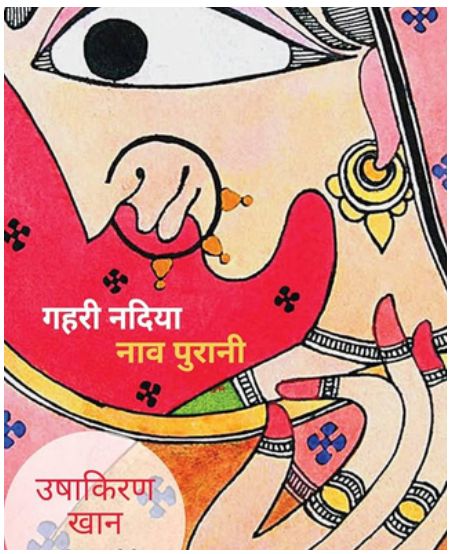

पुस्तक सूची

अनु. क्र.	दाखल क्र.	शीर्षक	लेखक	प्रकाशक	Call No.
1	D065220	कितने शहरों में कितनी बार	ममता कालिया	राजकमल पेपरबैक	H 891.433 KAL
2	D065221	बूँद बूँद ग़ज़ल	विनोद प्रकाश गुप्ता शलभ	राजकमल पेपरबैक	H 891.433 GUP
3	D065222	ठक्कन से नागार्जुन	शोभाकांत	राजकमल पेपरबैक	H 928 NAG/SHO
4	D065223	आवारा सजदे	कैफ़ी आज़मी	लोकभारती पेपरबैक	H 891.431 AAZ/ZAI
5	D065224	कविता में बनारस	राजीव सिंह	राजकमल परबैक्स	H 891.431 SIN
6	D065225	सम्पूर्ण कहानियां खंड 1	प्रेमचंद	लोकभारती पेपरबैक	H 891.433 PRE
7	D065226	सम्पूर्ण कहानियां खंड 2	प्रेमचंद	लोकभारती पेपरबैक	H 891.433 PRE
8	D065227	हमका दियो परदेस	मृणाल पाण्डे	राजकमल परबैक्स	H 891.433 PAN/JOS
9	D065228	ढलती साँझ का सूरज	मधु कांकरिया	राजकमल परबैक्स	H 891.433 KAN
10	D065229	तूफानों के बीच	रांगेय राघव	राधाकृष्ण प्रकाशन	H 891.433 RAG
11	D065230	माया ने घुमायो	मृणाल पांडेय	राधाकृष्ण प्रकाशन	H 891.433 PAN
12	D065231	जन नायक कृष्णा	वीरेन्द्र सारंग	राजकमल परबैक्स	H 891.433 SAR
13	D065232	यहाँ हाथी रहते थे	गीतांजलि श्री	राजकमल परबैक्स	H 891.433 SHR
14	D065233	जब जिंदगी मुस्कुरा दी	के.डी. सिंह	लोकभारती पेपरबैक	H 891.43092 SIN
15	D065234	डालडा की औलाद	विष्णु नागर	राजकमल परबैक्स	H 891.433092 NAG

पुस्तक सूची

Sr. No.	Accession No.	Title	Author	Publisher	Call No.
16	D065235	कश्मीर साहित्य और संस्कृति	शिबन कृष्ण रैना	लोकभारती पेपरबैक	H 891.499 RAI
17	D065236	न्यू मीडिया और बदलता भारत	प्रांजल धर	भारतीय ज्ञानपीठ	H 302.23 DHA/KRU
18	D065237	ताजमहल के आँसू	सुनील विक्रम सिंह	लोकभारती पेपरबैक	H 891.433 SIN
19	D065238	1000 संविधान प्रश्नोत्तरी	अनिल कुमार मिश्र	लोकभारती पेपरबैक	H 342.54 MIS
20	D065239	गहरी नदिया नाव पुरानी	उषा किरण खान	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.433 KHA
21	D065240	संचार शोध और मीडिया	धनंजय चोपड़ा	लोकभारती पेपरबैक	H 302.23072 CHO
22	D065241	मीडिया की बदलती भाषा	अजय कुमार सिंह	लोकभारती पेपरबैक	H 302.23 SIN
23	D065242	आदिवासी उपेक्षा की अंतर्कथा	कनक तिवारी	सस्ता साहित्य मंडल	H 305.906918 TIW
24	D065243	साधारण लोग, असाधारण शिक्षण: भारत के असल नायक	एस. गिरिधर	राजकमल पेपरबैक्स	H 923.711 GIR/PRA
25	D065244	बंद रास्तो का सफर	अनामिका	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.431 ANA
26	D065245	विज्ञापन बाजार और हिंदी	कैलाश नाथ पाण्डेय	लोकभारती पेपरबैक	H 659 PAN
27	D065246	भारतीय काव्यशास्त्र	महेंद्र मधुकर	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.431 09 MAD
28	D065247	कवि परंपरा की पड़ताल	हेमंत कुकरेती	भारतीय ज्ञानपीठ	H 891.431 09 KUK
29	D065248	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	राधाकृष्ण प्रकाशन	H 928 BHA
30	D065249	अगले वक़्त के हैं ये लोग	अटल बिहारी वाजपेयी	सेतु प्रकाशन	H 891.43092 VAJ

पुस्तक सूची

Sr. No.	Accession No.	Title	Author	Publisher	Call No.
31	D065250	शकुंतला	मोहन राकेश	राधाकृष्ण पेपरबैक्स	H 891.22 KAL/RAK
32	D065251	हिंदी की पहली आधुनिक कविता	सुदीप्ति	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.43109 SUD
33	D065252	कविता सदी	सुरेश सलिल	राजपाल एंड संस	H 891.431 SAL
34	D065253	1000 हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी	कुमुद शर्मा	प्रभात पेपरबैक्स	H 891.43 SHA
35	D065254	1000 मीडिया प्रश्नोत्तरी	अनीश भसीन	प्रभात पेपरबैक्स	H 302.23 BHA
36	D065255	1000 पत्रकारिता प्रश्नोत्तरी	एस. पी. चैतन्य	प्रभात पेपरबैक्स	H 070 CHA
37	D065256	1000 कंप्यूटर इंटरनेट प्रश्नोत्तरी	विनय भूषण	प्रभात पेपरबैक्स	H 004 BHU
38	D065257	भारतीय साहित्य और आदिवासी-विमर्श	माधव सोनटक्के	वाणी प्रकाशन	H 891.4309 SON/RAT
39	D065258	स्वप्न प्रेमी	दामोदर मावज़ो	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.433 MAU/GUR
40	D065259	संपूर्ण कहानियाँ	मृदुला गर्ग	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.433 GAR
41	D065260	सावरकर : काला पानी और उसके बाद	अशोक कुमार पांडेय	राजकमल पेपरबैक्स	H 923.254 SAV/PAN
42	D065261	लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ	पारख जवरीमल्ल	अनामिका पब्लिशर	H 791.43 PAR
43	D065262	लेखक कैसा बनें?	रेणु तलवार	अनबाउंड स्क्रिप्ट	H 808.02 BON/TAL
44	D065263	दूसरी परंपरा की खोज	नामवर सिंह	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.4309 SIN
45	D065264	रेत समाधी	गीतांजलि श्री	राजकमल पेपरबैक्स	H 891.433 SHR

पुस्तक सूची

Sr. No.	Accession No.	Title	Author	Publisher	Call No.
46	D065265	हुंकार	रामधारी सिंह दिनकर	लोकभारती पेपरबैक	H 891.431 SIN
47	D065266	बापू की पाती	सोपान जोशी	राजकमल पेपरबैक्स	H 923.254 GAN/JOS
48	D065267	एक था मोहन	सोपान जोशी	राजकमल पेपरबैक्स	H 923.254 GAN/JOS
49	D065268	विद्रोहिणी 25 ओजस्वल स्त्रियोंक के किस्से	मनिष पाण्डेय	अनबाउंड स्क्रिप्ट	H 305.42 FAV/PAN
50	D065269	लोक साहित्य की भूमिका	कृष्णदेव उपाध्याय	लोकभारती पेपरबैक	H 398.2 UPA
51	D065270	जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम	करुणाशंकर उपाध्याय	राधाकृष्ण प्रकाशन	H 891.43109 PRA/UPA
52	D065271	भूमण्डलीकरण और हिंदी	रामकुमार वर्मा	लोकभारती पेपरबैक	H 891.430 9 VAR
53	D065272	हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	रामकुमार वर्मा	लोकभारती पेपरबैक	H 891.43309 VER
54	D065273	हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान	मैनेजर पाण्डेय	वाणी प्रकाशन	H 891.43109 PAN
55	D065274	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	लोकभारती पेपरबैक	H 891.43309 CHA
56	D065275	जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश की रंग दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन	रिताराणी पालीवाल	सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन	H 891.43209 PAL
57	D065276	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास	बच्चन सिंह	लोकभारती पेपरबैक	H 891.43309 SIN
58	D065277	कविता के प्रस्थान	सुधीर रंजन सिंह	राजकमल प्रकाशन	H 891.43109 SIN
59	D065278	साहित्य का समाजशास्त्र	बच्चन सिंह	लोकभारती प्रकाशन	H 891.430 9 SIN
60	D065279	हिंदी काव्य चिंतन के मूलाधार	योगेन्द्र प्रताप सिंह	लोकभारती प्रकाशन	H 891.43109 SIN

पुस्तक सूची

Sr. No.	Accession No.	Title	Author	Publisher	Call No.
61	D065280	21 वीं सदी की कविता का चेहरा: लीलाधर जगुड़ी	आशिष कुमार गुप्ता	लोकोदय प्रकाशन	H 891.43109 JAG/GUP
62	D065281	स्मृति में जीवन	केदारनाथ सिंह	राजकमल प्रकाशन	H 891.43108 SIN/SIN
63	D065282	भूमंडलीकरण और ग्लोबल मीडिया	जगदीश्वर चतुर्वेदी	अनामिका पब्लिशर	H 302.23 CHA/ SIN
64	D065283	शब्दों का सफर: पहला पड़ाव	अजित वडनेरकर	राजकमल प्रकाशन	H 891.432 WAD
65	D065284	शब्दों का सफर: दूसरा पड़ाव	अजित वडनेरकर	राजकमल प्रकाशन	H 891.432 WAD
66	D065285	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	बच्चन सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन	H 891.43309 SIN
67	D065286	आलोचना के सीमांत	कृष्णदत्त शर्मा	अनामिका पब्लिशर	H 891.43309 SHA
68	D065287	कश्मीर इतिहास और परंपरा	कुमार निर्मलेन्दु	लोकभारती प्रकाशन	H 954.6 NIR
69	D065368	भूमंडलीकरण	दिनेश पाठक	आर. के. पब्लिकेशन	H 891.430 9 PAT

Library Activity Reports

Book Display on World Wide Web Day
1st August 2023

Mithibai College Jitendra Library organized a One Day Book Display on **'World Wide Web Day'** on 1st August 2023.

In 1989, Tim Berners-Lee created the World Wide Web in CERN to connect with his coworkers. On 1st August 1991, he brought the World Wide Web to the public. Hence, this day is acknowledged and celebrated worldwide for the invention of the founder of the Internet.

In the present age, WWW has become a basic communication requirement. Due to WWW, users can access public websites or webpages on their gadgets via internet.

Mithibai College Library has a vast collection of books on various aspects of the Internet and computers. Out of those selective, books were displayed in the library on World Wide Web Day. Mithibai College students and Faculty members visited the display and issued books from the Display. They appreciated the varied books on the subject in English, Hindi and Marathi languages.

Library Activity Reports

Book Display on Vishwa Gujarati Bhasha Divas
24th August 2023

Mithibai College Jitendra Library organized a Book Display on '**Vishwa Gujarati Bhasha Divas'** on 24th August 2023 in Mithibai College Foyer area on the first floor.

24th August is the birth anniversary of the legendary Gujarati poet, social reformer, Narmadashankar Lalshankar Dave, popularly known as Narmad. He was an Indian Gujarati-language poet, playwright, essayist, orator, and lexicographer.

Veer Narmad is considered to be the founder of modern Gujarati literature. He was a teacher by profession. Later he stopped serving as a teacher to live by writing. He introduced many literary forms in Gujarati. His essays, poems, plays and prose were published in several collections. His Mari Hakikat, the first autobiography in Gujarati, was published posthumously. His poem Jai Jai Garavi Gujarat is now the state anthem of Gujarat state of India.

Mithibai College Jitendra Library unveiled the **Mithibai Chronicle's** (Newsletter) **special issue**, dedicated to **'Vishwa Gujarati Bhasha Divas'**, during the function organized by the Department of Indian Languages of Mithibai College. It also displayed Gujarati books from the vast collection housed in Jitendra Library. College students and Faculty visited the exhibit, issued books and appreciated the varied collection of books.

सुनहरा भविष्य बनाने के लिए अनिवार्य है; किताबों से मित्रता करना ।

ताकत का नया स्रोत कुछ लोगों के हाथ में धन होना नहीं है, बल्कि कई लोगों के हाथ में पुस्तकों का होना है।

FOLLOW

facebook
Join us on Facebook

YouTube

Follow us

archana.garate@mithibai.ac.in